

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन आधारित केन्द्रीय विद्यालयों व निजी विद्यालयों के अध्यापकों की मानसिक दबाव की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन



अख्तर बानो

व्याख्याता,
राजनीति विज्ञान विभाग,
विद्या भवन गो.से. शिक्षक
महाविद्यालय, (सीटीई),
उदयपुर, राजस्थान

सारांश

वर्तमान विद्यालयी शिक्षा आज बदलाव के दौर से गुजर रही है, अनेक तरह की चुनौतियाँ हमारे सामने हैं, उनमें सबसे प्रमुख है “मूल्यांकन” या फिर “सीखने सिखाने” की प्रक्रिया है। मूल्यांकन पद का प्रयोग जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में होता है। जहाँ इसका आशय परिणामों की वांछनीयता को निर्धारित करना होता है। शिक्षा के क्षेत्र में मूल्यांकन और अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि शिक्षक अपने विद्यार्थियों में वांछित ज्ञान के स्तर को समझ पाता है। लेकिन साथ ही यह भी माना जाता रहा है कि “शिक्षा में मूल्यांकन शब्द परीक्षा के तनाव व दुश्चिन्ता से जुड़ा है। (NCF 2005) विद्यार्थियों के इस तनाव को कम करने के उद्देश्य से ही सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन को अपनाया गया जिससे विद्यार्थियों के शैक्षिक पक्ष के साथ-साथ सह शैक्षिक पक्षों का मूल्यांकन भी सुगमतापूर्वक किया जा सके। प्रस्तुत शोध के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया गया कि सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन लागू होने के पश्चात् अध्यापकों के मानसिक दबाव की स्थिति कैसी है तथा वह मानसिक दबाव का अनुभव करते हैं या नहीं। यह शोध केन्द्रीय विद्यालय व निजी विद्यालयों के अध्यापकों पर किया गया। शोध निष्कर्ष में यह पाया गया कि सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन लागू होने के बाद भी शिक्षक मानसिक दबाव अधिक महसूस करते हैं।

मुख्य शब्द : सतत् एवं व्यापक, मानसिक दबाव, रचनात्मक, योगात्मक, मूल्यांकन।

प्रस्तावना

किसी भी देश का भविष्य और लोकतंत्र की सफलता देश की जनता की शैक्षिक स्थिति पर निर्भर करती है। देश की शैक्षिक स्थिति सुधारने और जागरूकता लाने का कार्य शिक्षक द्वारा किया जाता है। उसे हमारे समाज का कर्णधार माना जाता है। जिस प्रकार माली अपने पौधों की समय-समय पर देखभाल करता है ठीक उसी प्रकार शिक्षक भी अपने शिक्षार्थियों की समय-समय पर देखभाल करता है। और उनकी उपलब्धि का पता लगाने की कोशिश करता है। विद्यार्थियों की उपलब्धियों को जानने के लिए वह मूल्यांकन की प्रक्रिया को अपनाता है। मूल्यांकन ही एक ऐसी प्रक्रिया है जो सम्पूर्ण शिक्षण प्रणाली को प्रभावित करती है। इसी के आधार पर बालक और अध्यापक के अध्ययन और अध्यापन की प्रणाली निर्भर करती है। विविध प्रकार की परीक्षाएँ तथा परीक्षण मूल्यांकन प्रक्रिया के प्रकार हैं जिसके द्वारा अर्जित ज्ञान तथा संशोधित व्यवहार का मूल्यांकन होता है।

वर्तमान विद्यालयी शिक्षा आज बदलाव के जिस दौर से गुजर रही है उसके केन्द्र में है “मूल्यांकन” या फिर “सीखने सिखाने” की प्रक्रिया के प्रति एक नया दृष्टिकोण। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए मूल्यांकन में जो कुछ भी पढ़ाया जाता है, वह कैसे पढ़ाया जाता है और क्या पढ़ाया जाता है, सिखाने की प्रक्रिया क्या है? यह सभी बातें मूल्यांकन की प्रक्रिया को प्रभावित करती हैं।

आज शिक्षा जगत से जुड़े व्यक्तियों का यह मानना है कि प्रारम्भ से चली आ रही अध्ययन अध्यापन की प्रक्रिया में सीखने सिखाने की प्रक्रिया को कम महत्व दिया जाता रहा है। इससे शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों ही सीखने की न्यूनतम क्रियाओं पर बल देते हैं।

आज मूल्यांकन की चुनौती हमारे सामने है। परीक्षा सुधारकों के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए ये परिकल्पना की गई है— कि प्रत्येक विद्यार्थी का मूल्यांकन पाठ्यक्रम समाप्त होने की बजाय या बाह्य परीक्षा लिए जाने की बजाय शिक्षा प्राप्ति की समूची अवधि में किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त

बालक के किसी एक पक्ष का मूल्यांकन ना किया जाये बल्कि बालक के सभी पहलुओं को उसमें शामिल किया जाना चाहिए।

सवाल यह उठता है कि हमें मूल्यांकन कि आवश्यकता क्यों है?

1. हम बच्चों की मदद कर सकें बेहतर सीखने के लिए कि जो कुछ उन्होंने सीखा है वह बच्चों की रुचियों के अनुरूप है या नहीं।
2. प्रशासन व प्रबन्धन के लिए – प्रत्येक विद्यार्थी जिस विद्यालय में शिक्षा प्राप्त कर रहा है वह विद्यालय यह प्रमाणित करता है कि इस विद्यार्थी की निष्पत्ति अच्छी रही या बुरी रही। यह सीखने के आधार पर ही प्रमाणित किया जा सकता है।
3. अभिभावकों से सम्प्रेषण – समय-समय पर विद्यालय द्वारा अभिभावकों के साथ मिटिंग की जाती है यह जानने के लिए बच्चा सीखने में कैसा है, उसके सीखने की प्रक्रिया को और अधिक बेहतर कैसे बनाया जा सकता है। उसे किस तरह की मदद की आवश्यकता है।
4. विद्यालय वातावरण को सुदृढ़ करने के लिए भी मूल्यांकन आवश्यक होता है ताकि विद्यालय बच्चे के ज्ञान, आचरण और प्रगति में होने वाले बदलावों को महसूस कर सके तथा बच्चों की प्रगति को और कैसे बढ़ाया जाये, यह सुनिश्चित कर सकें।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि शिक्षा का सम्बन्ध बच्चे के सर्वांगीण विकास से है (शारीरिक, सामाजिक, भावात्मक, बौद्धिक) से है। इसलिए बच्चे के विकास के सभी पहलुओं को आंके जाने की आवश्यकता है। वर्तमान में हम समूचे बच्चे को नहीं आंकते बल्कि हम विशिष्ट क्षेत्रों में उसकी शैक्षिक उपलब्धि का मूल्यांकन करते हैं। हम विद्यार्थी का मूल्यांकन बुनियादी रूप से उसके परीक्षा परिणामों के आधार पर करते हैं। इस प्रक्रिया के स्वरूप को अधिक बेहतर बनाने के लिए महत्वपूर्ण है कि शिक्षा प्राप्ति का निर्धारण कक्षा के अंदर और बाहर की हर प्रकार की स्थितियों और वातावरण में किया जाए जाना चाहिए। कक्षा में पढ़ने पढ़ाने के तरीके से बच्चों की अन्तर्निहित क्षमताओं को उभारने की आवश्यकता है जिससे और बालकों में अपने ज्ञान का निर्माण करने की क्षमता विकसित हो, सके। बच्चों ने जो कुछ सीखा है उनका मूल्यांकन उनके पढ़ने के दौरान लगातार होता रहे, और उन्हें परीक्षण का भय नहीं लगे। परीक्षाएँ बच्चों का मूल्यांकन बताने वाली हो तथा साथ ही उससे शिक्षक को अपनी शिक्षण योजना में बदलाव करने का आधार एवं मौका भी मिले।

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की प्रक्रिया वास्तव में व्यापक गुणवत्ता सुधार प्रक्रिया है। इसे सीखने-सिखाने की विधा एवं विद्यार्थी के विद्यालय आधारित मूल्यांकन व्यवस्था के रूप में ही समझा जाये जिससे विद्यार्थी के सीखने के सभी पक्षों पर ध्यान दिया जाता है। सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन जहाँ एक ओर कक्षा प्रक्रिया के रूप में होगा वहीं आवधिक मूल्यांकन के रूप में होगा। साथ ही व्यापकता उन मुद्दों को प्रमुख रूप से रेखांकित करेगी जो बच्चों में विभिन्न कौशल भावात्मक और क्रियात्मक पक्ष को उजागर करेगी।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 और शिक्षा का अधिकार कानून 2009 में कहा गया है कि “कक्षा में सीखने की प्रक्रियाएँ ऐसी हो जो जिससे बच्चों में छिपी हुई प्रतिभा और संभावना के विकास को पहचाना जा सके।” और यदि ऐसा है तो सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन को अपनाने के अलावा हमारे पास और कोई रास्ता नहीं है। क्योंकि यदि पहले से तय किए गए बिन्दुओं के आधार पर यदि हम आंकलन करते हैं तो बच्चों की छिपी हुई प्रतिभा या उनमें संभावना का स्थान खत्म हो जाता है। एक ही दिन में सभी बच्चों की परीक्षा लेकर मूल्यांकन या आंकलन करने में समग्रता का पता नहीं चल सकेगा। इसलिए सतत् एवं समग्र मूल्यांकन प्रणाली में शैक्षिक पक्ष के साथ सह-शैक्षिक पक्ष को भी उतना ही महत्व दिया जाता है।

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन विद्यार्थियों के विकास के समस्त क्षेत्रों का विस्तृत एवं नियमित आंकलन है, जिसमें विभिन्न विधियों एवं उपकरणों के माध्यम से विद्यार्थियों का आंकलन किया जाता है जिसमें विद्यार्थियों की कमियों और क्षमता को बार-बार बताया जाता है ताकि उन्हें अपने आपको समझने व सुधारने के बेहतर अवसर प्राप्त हो सके। साथ ही शिक्षकों को भी प्रतिपुष्टि उपलब्ध करवाता है ताकि वे अपने शिक्षण सम्बन्धी कार्य नीतियों में सुधार कर सकें।

सतत्

सतत् शब्द का शाब्दिक आशय है—लगातार अर्थात् निरंतर आंकलन करना। एक घटना की बजाय सतत् प्रक्रिया जो सम्पूर्ण शैक्षिक सत्र की अवधि में फैला होता है, जिसमें—

1. मूल्यांकन की नियमितता
2. इकाई परीक्षण की आवृत्ति
3. सीखने के अंतराल के निदान
4. सुधारात्मक उपायों का प्रयोग
5. पृष्ठपोषण

इस तरह सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन विद्यार्थियों की क्षमता और कमियों को बताता है ताकि उन्हें अपने आपको समझने और सुधारने का बेहतर अवसर मिल सके। सतत् आंकलन एवं कक्षा शिक्षण साथ-साथ चलने वाली प्रक्रियाएँ हैं जिसमें विद्यार्थी का आंकलन सतत् रूप से किया जाता है। जिससे विद्यार्थियों के व्यवहार में वांछित परिवर्तन के साथ-साथ यह भी ज्ञात होता है कि विद्यार्थियों ने क्या सीखा एवं कहाँ सुधार करने की आवश्यकता है।

व्यापक

व्यापकता से आशय विद्यार्थी के समग्र विकास से है जिसमें बालक की शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, नैतिक, संवेगात्मक विकास को भी शामिल किया जाता है, जिसमें विद्यार्थियों की ‘सर्वद्वि एवं विकास’ के शैक्षिक व सह-शैक्षिक दोनों क्षेत्रों को समाहित करने का प्रयास किया जाता है। चूंकि योग्यताएँ, अभिवृत्तियाँ और अभिरूचियाँ अपने आपको लिखित शब्दों में भिन्न अन्य रूपों में प्रकट करती हैं। इस तरह की व्यापकता विद्यार्थी जीवन के संज्ञानात्मक व सहसंज्ञात्मक दोनों क्षेत्रों में पाई जाती है।

मूल्यांकन

मूल्यांकन कक्षा अधिगम के साथ-साथ विद्यार्थियों के सीखने की गति उनकी अवधारणा, ज्ञान, अभिवृद्धि, कौशल व्यवहार आदि को जानने के लिए योजनाबद्ध तरीके से विश्लेषण व व्याख्या करना एवं सुझाव देने की प्रक्रिया है। मूल्यांकन के लिए विद्यार्थी की वर्तमान स्थिति, बदलता हुआ स्वरूप और व्यापक विवरण रखना आवश्यक होता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के अनुसार “सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन जिसमें अनुदेशन की पूरी अवधि तक प्रदत्त शिक्षा के शैक्षणिक एवं शैक्षणिकेतर दोनों ही पक्ष शामिल हैं को क्रियान्वित करता है। (एन.पी.ई. 1986, पृ. 87)।”

इस प्रकार सम्पूर्ण सम्प्रत्यय को देखने से यह पता चलता है कि सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन नियमित एवं निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जिसमें अधिगम एवं शिक्षण प्रक्रिया साथ-साथ चलती है। सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन से तात्पर्य यही है कि “क्या सिखा जाना चाहिए” और “कैसे सिखाया जाना चाहिए”। सम्पूर्ण मूल्यांकन की प्रक्रिया इस पर आधारित होती है।

मानसिक दबाव

दबाव एक गत्यात्मक, मानसिक, संज्ञानात्मक अवस्था है जो उस समय की स्थिति को विघटित करती है, तथा उससे ऐसा असंतुलन उत्पन्न होता है, जिसके कारण उस असंतुलन के समाधान तथा समस्थिति को पुनः स्थापित करने की आवश्यकता उत्पन्न होती है।

हंस सेली (1979) ने दबाव के बारे में कहा है “दबाव से तात्पर्य शरीर द्वारा आवश्यकतानुसार किए गए अवशिष्ट अनुक्रिया से होता है।”

हंस सेली (1979) ने दबाव जीवन की सामान्य संतुलन प्रणाली के असफल हो जाने की अवस्था है, तथा इस बिगड़ी हुई अवस्था से पुनः सामान्य अवस्था में ना आ पाने के कारण दबाव उत्पन्न होता है।”

सामान्य रूप से दैनिक जीवन में घटित होने वाली नकारात्मक घटनाएँ दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं के कारण ही दबाव व तनाव उत्पन्न होता है।

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन का विकास

यदि हम सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की बात करते हैं यह सम्प्रत्यय हमारे लिए नया नहीं है। यदि हम स्वतंत्रता से पहले या स्वतंत्रता के पश्चात् भारत में बने आयोगों को देखते हैं तो उनमें कहीं ना कहीं आन्तरिक मूल्यांकन की बात कहीं गई है। इसके अतिरिक्त परीक्षा शिक्षा प्रणाली का अभिन्न अंग रहा है। परीक्षाओं के माध्यम से ही हम यह जान पाते हैं कि विद्यार्थियों में ज्ञान की पहुँच कहाँ तक हो पाई है तथा कहाँ सुधार की आवश्यकता है। सभी शिक्षाशास्त्री इस बात से सहमत थे कि परीक्षाओं में आवश्यक सुधार की आवश्यकता है और इसमें सुधार करके ही हम शिक्षा प्रणाली को अधिक प्रासंगिक बना सकते हैं। हण्टर आयोग (1882), सैडलर आयोग (1917), हर्टॉग कमेटी (1929) में परीक्षा प्रणाली में सुधार करने तथा आन्तरिक मूल्यांकन को अपनाने की बात कही गई।

NCF-2005 (परीक्षा प्रणाली में सुधार, आधार पत्र) “एक संवेदनशील शिक्षक सामान्यतः विद्यार्थियों की

विशेष क्षमताओं व कमजोरियों को पहचानता है और उसे अपनी इस दृष्टि का उपयोग मूल्यांकन में करना चाहिए। आन्तरिक मूल्यांकन की व्यवस्था को सशक्त बनाने के लिए उसे और अधिकार दिए जाएँ।”

विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1948-49) में कहा गया है कि परीक्षा हमारी शिक्षा व्यवस्था की व्यापक बुराई है। यह परीक्षा प्रणाली विद्यार्थियों को स्मरण करने की एक मशीन में परिवर्तित कर देती है।” (गुप्ता 2009, पृ. 65) **माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952-53)** ने परीक्षा प्रणाली के दोषों का वर्णन करते हुए कहा कि परीक्षा इस समय पाठ्यक्रम को निर्धारित कर रही है। पाठ्यक्रम में क्या ज्यादा महत्वपूर्ण है, यह इस आधार पर निर्धारित किया जाता है कि परीक्षा में क्या ज्यादा पूछा जायेगा?

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 ने परीक्षा सुधार की बात स्पष्ट करते हुए कहा कि कक्षा दसवीं की बोर्ड परीक्षा को स्वैच्छिक बना देना चाहिए एवं जो बोर्ड का प्रमाण पत्र नहीं लेना चाहते हैं, उन्हें आन्तरिक विद्यालयीय परीक्षा देने की स्वतंत्रता होनी चाहिए। आज आवश्यकता है विद्यार्थियों को विभिन्न क्षेत्रों में सोचने के योग्य बनाना चाहिये, जिससे विद्यार्थियों को अपनी योग्यता एवं क्षमता के अनुरूप सीखने के अवसर प्राप्त हो सकें। (राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005, पृ. 38)।

परीक्षा प्रणाली की विभिन्न कमियों को देखते हुए इस परीक्षा प्रणाली में सुधार करने के लिए अनेक परिवर्तनों की आवश्यकता है। उनमें से एक महत्वपूर्ण परिवर्तन सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की संकल्पना को अपनाना है। विद्यार्थियों के शैक्षिक एवं सह-शैक्षिक दोनों पक्षों का यदि समग्र आंकलन करना है तो विद्यालय आधारित आंकलन को अपनाना होगा :-

1. बच्चों पर से दबाव कम करने
2. मूल्यांकन को व्यापक और नियमित बनाने
3. शिक्षकों को रचनात्मक शिक्षण का अवसर देने
4. निदान के लिए साधन उपलब्ध कराने और श्रेष्ठतर योग्यता वाले विद्यार्थियों को तैयार करने के लिए स्कूल आधारित मूल्यांकन व्यवस्था स्थापित होनी चाहिए।

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने 2010-11 से दसवीं कक्षा में बोर्ड की परीक्षा को वैकल्पिक किया गया। सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन लागू होने के बाद अब परीक्षा प्रणाली में परिवर्तन आया है। दो प्रकार की परीक्षाएँ आयोजित की जा रही हैं, रचनात्मक एवं योगात्मक।

रचनात्मक मूल्यांकन

रचनात्मक मूल्यांकन में कक्षा एवं कक्षा के बाहर के व्यवहार का आंकलन किया जाता है। इस आंकलन में समय सीमा निर्धारित नहीं है, यह आंकलन व्यक्तिगत पर निर्धारित हो जाता है, परिणाम के आधार पर विद्यार्थियों को उनकी कमियों को बताया जाता है तथा उन कमियों में सुधार के लिए सुझाव दिए जाते हैं।

योगात्मक मूल्यांकन

योगात्मक मूल्यांकन सम्पूर्ण कक्षा का एक साथ किया जाता है। सम्पूर्ण कक्षा का सामान्य एक ही पेपर होता है। इसकी एक निश्चित समयावधि होती है। यह पूरे वर्ष में दो बार लिया जाता है। प्रत्येक योगात्मक आंकलन साठ प्रतिशत भार वहन करता है।

अन्त में रचनात्मक व योगात्मक आंकलन के अंकों को जोड़कर अंतिम परिणाम घोषित किया जाता है।

अध्ययन की आवश्यकता

राव एवं राव (2004) राव (2010) ने अपने अध्ययन में स्पष्ट किया कि मूल्यांकन प्रक्रिया पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रशिक्षण का सकारात्मक प्रभाव पड़ा तथा उनकी मूल्यांकन प्रक्रिया में सुधार आया।

भट्टाचार्य अर्चना (2002) ने अपने अध्ययन में विद्यालयों में सह-शैक्षिक गतिविधियों के प्रभाव व मूल्यांकन के लिए ली जाने वाली प्रक्रिया को देखा इसमें यह पाया कि सह-शैक्षिक गतिविधियों को उतना महत्व नहीं दिया जाता जितना की वह बालक के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक है।

पाण्डे, विजय (2005) ने अपने शोध में विद्यालयों में लिखित प्रारूप एवं प्रायोगिक मूल्यांकन प्रणाली के बीच संबंधों का समालोचनात्मक अध्ययन किया जिसमें प्रमाणिक मूल्यांकन प्रणाली एवं विद्यालयों में चल रही मूल्यांकन प्रणाली में सार्थक अन्तर पाया गया।

पूजा (2011) एवं प्रकाश (2013) ने सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति शिक्षकों के दृष्टिकोण व जागरूकता का अध्ययन किया और निष्कर्ष में पाया कि ज्यादातर शिक्षकों में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति जागरूकता नहीं है। तथा सरकारी प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रत्यक्षीकरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अभी तक जितने भी अध्ययन हुए हैं उनमें किसी के द्वारा सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति निजी व केन्द्रीय विद्यालयों के अध्यापकों की मानसिक दबाव की स्थिति को देखने का प्रयास नहीं किया गया है। अतः ज्ञान के इस रिक्त स्थान की पूर्ति के लिए यहाँ पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन आधारित निजी व केन्द्रीय विद्यालयों के अध्यापकों की मानसिक दबाव की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन किया गया।

समस्या कथन

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन आधारित केन्द्रीय विद्यालयों व निजी विद्यालयों के अध्यापकों की मानसिक दबाव की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन।

अध्ययन के उद्देश्य

1. सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन आधारित केन्द्रीय विद्यालयों के शिक्षकों की मानसिक दबाव की स्थिति का अध्ययन करना।
2. सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन आधारित निजी विद्यालयों के शिक्षकों की मानसिक दबाव की स्थिति का अध्ययन करना।
3. सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन आधारित केन्द्रीय विद्यालयों तथा निजी विद्यालयों के शिक्षकों की मानसिक दबाव की स्थिति की तुलना करना।

परिकल्पना

1. सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन आधारित केन्द्रीय विद्यालय व निजी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के मानसिक दबाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन की विधि

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन का प्रतिदर्श

उदयपुर जिले में स्थित निजी विद्यालय (सी.बी. एस.ई. आधारित) तथा केन्द्रीय विद्यालय के कक्षा IX में पढ़ाने वाले शिक्षकों का चयन सोद्देश्य चयन विधि द्वारा किया गया। 20 निजी विद्यालयों के शिक्षक तथा 20 केन्द्रीय विद्यालयों के शिक्षकों को चुना गया।

इस अध्ययन में आँकड़ों के संग्रहण के लिए अध्यापकों हेतु स्वनिर्मित मानसिक दबाव प्रमापनी बनाई गई, जिसमें कुल 38 पद थे।

इस शोध में अध्यापकों का जो मानसिक दबाव देखा जा रहा है वह इस चार आधारों पर देखा जा रहा है— विद्यालय सम्बन्धी मानसिक दबाव, प्रायोजना कार्य सम्बन्धी मानसिक दबाव, मानव व्यवहार सम्बन्धी मानसिक दबाव तथा मूल्यांकन सम्बन्धी मानसिक दबाव।

परिणाम व व्याख्या

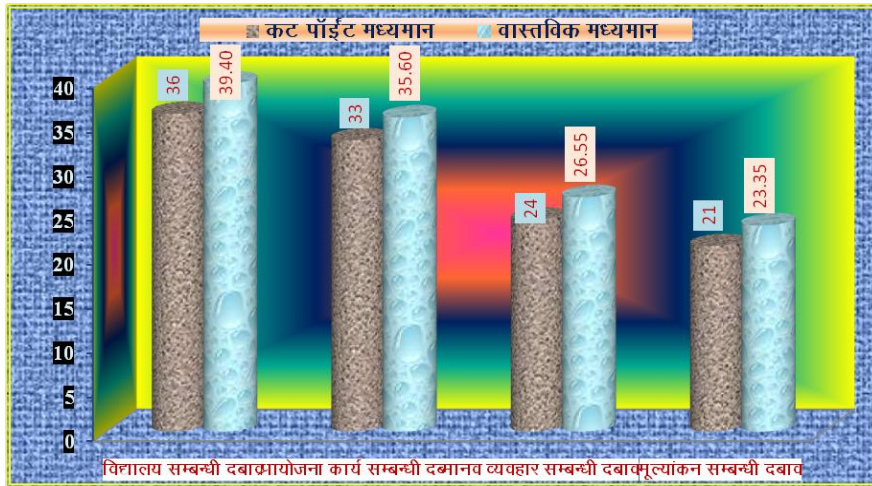
आँकड़ों के संग्रहण के पश्चात् उनके साथ गणितीय सक्रिया करने के पश्चात् निम्न परिणाम प्राप्त हुए। प्रस्तुत शोध में आँकड़ों का विश्लेषण दो प्रकार से किया गया। मध्यमान के आधार पर तथा कथनवार जिसका वर्णन निम्नानुसार किया जा रहा है—

सारणी संख्या-1

सतत् और व्यापक मूल्यांकन आधारित केन्द्रीय विद्यालयों के समस्त शिक्षकों (N=20) की मानसिक दबाव की स्थिति का मध्यमान के आधार पर क्षेत्रवार विश्लेषणात्मक अध्ययन

क्र. सं.	क्षेत्र	कथनों की संख्या	कट पॉइंट मध्यमान	वास्तविक मध्यमान	मानक विचलन
1	विद्यालय सम्बन्धी दबाव	12	12×3=36	39.40	4.99
2	प्रायोजना कार्य सम्बन्धी दबाव	11	11×3= 33	35.60	3.98
3	मानव व्यवहार सम्बन्धी दबाव	8	8×3= 24	26.55	3.12
4	मूल्यांकन सम्बन्धी दबाव	7	7×3= 21	23.35	2.51
	कुल दबाव	38	38×3= 114	124.90	11.85

आरेख संख्या-1



समग्र रूप में विश्लेषण एवं व्याख्या

सारणी एवं आरेख-1 का अध्ययन करने से ज्ञात हुआ कि समग्र रूप में सतत् और व्यापक मूल्यांकन आधारित केन्द्रीय विद्यालयों के शिक्षकों मानसिक दबाव का मध्यमान 124.90 प्राप्त हुआ, जबकि इस क्षेत्र का कट पॉइंट मध्यमान 114 है। इस प्रकार वास्तविक मध्यमान

कट पॉइंट मध्यमान से 10.90 अधिक तो है, परन्तु यह आधिक्य के मानक विचलन 11.85 से थोड़ा कम होने से यह कहा जा सकता है कि समग्र रूप में सतत् और व्यापक मूल्यांकन आधारित केन्द्रीय विद्यालयों के शिक्षकों को मानसिक दबाव प्रभावित तो कर रहा है, परन्तु केवल साधारण मात्रा में ही, जो कि इतना उल्लेखनीय नहीं है।

सारणी संख्या-2

सतत् और व्यापक मूल्यांकन आधारित निजी विद्यालयों के समस्त शिक्षकों (N=20) की मानसिक दबाव की स्थिति का मध्यमान के आधार पर क्षेत्रवार विश्लेषणात्मक अध्ययन

क्र. सं.	क्षेत्र	कथनों की संख्या	कट पॉइंट मध्यमान	वास्तविक मध्यमान	मानक विचलन
1	विद्यालय सम्बन्धी दबाव	12	12×3= 36	43.95	5.78
2	प्रयोजना कार्य सम्बन्धी दबाव	11	11×3= 33	35.60	5.42
3	मानव व्यवहार सम्बन्धी दबाव	8	8×3= 24	29.05	3.43
4	मूल्यांकन सम्बन्धी दबाव	7	7×3= 21	25.95	3.64
कुल दबाव		38	38×3= 114	138.45	16.93

आरेख संख्या-2



सतत् और व्यापक मूल्यांकन आधारित निजी विद्यालयों के समस्त शिक्षकों (N=20) पर क्षेत्रवार मानसिक दबाव

समग्र रूप में विश्लेषण एवं व्याख्या

सारणी एवं आरेख संख्या-2 का अध्ययन करने से ज्ञात हुआ कि समग्र रूप में सतत् और व्यापक मूल्यांकन आधारित निजी विद्यालयों के शिक्षकों के मानसिक दबाव का मध्यमान 138.45 प्राप्त हुआ, जबकि इस क्षेत्र का कट पॉइंट मध्यमान 114 है। इस प्रकार

वास्तविक मध्यमान कट पॉइंट मध्यमान से 24.45 अधिक है, आर यह आधिक्य मानक विचलन 16.93 से कहीं अधिक है। अतः इस आधार पर कहा जा सकता है कि सतत् और व्यापक मूल्यांकन के सन्दर्भ में निजी विद्यालयों के शिक्षकों को समग्र रूप में मानसिक दबाव काफी प्रभावित कर रहा है।

सारणी संख्या-3

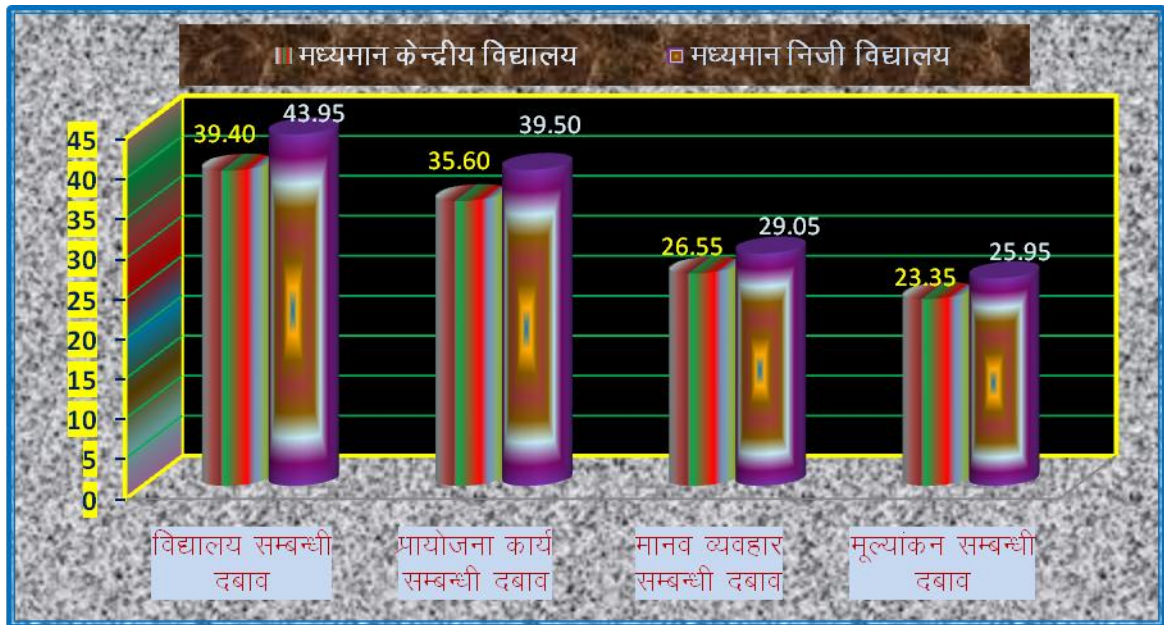
सतत् और व्यापक मूल्यांकन आधारित केन्द्रीय विद्यालयों तथा निजी विद्यालयों के शिक्षकों की मानसिक दबाव की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन

क्र. सं.	क्षेत्र	न्यादर्श (20)	मध्यमान	मानक विचलन	'टी' मान	सार्थक/असार्थक अन्तर
1	विद्यालय सम्बन्धी दबाव	केन्द्रीय विद्यालय	39.40	4.99	2.66	सार्थक अन्तर (.05)
		निजी विद्यालय (CBSE आधारित)	43.95	5.78		
2	प्रायोजना कार्य सम्बन्धी दबाव	केन्द्रीय विद्यालय	35.60	3.97	2.59	सार्थक अन्तर (.05)
		निजी विद्यालय (CBSE आधारित)	39.50	5.42		
3	मानव व्यवहार सम्बन्धी दबाव	केन्द्रीय विद्यालय	26.55	3.12	2.41	सार्थक अन्तर (.05)
		निजी विद्यालय (CBSE आधारित)	29.05	3.43		
4	मूल्यांकन सम्बन्धी दबाव	केन्द्रीय विद्यालय	23.35	4.99	2.66	सार्थक अन्तर (.05)
		निजी विद्यालय (CBSE आधारित)	25.95	5.78		

df = 38 (40)

.05 सार्थकता स्तर पर 2.02

.01सार्थकता स्तर पर 2.70

आरेख संख्या-3

सतत् और व्यापक मूल्यांकन आधारित केन्द्रीय विद्यालयों तथा निजी विद्यालयों के शिक्षकों की मानसिक दबाव की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन

विश्लेषण एवं व्याख्या

सारणी एवं आरेख संख्या-3 से स्पष्ट है कि केन्द्रीय विद्यालय व निजी विद्यालय के क्षेत्रवार मानसिक दबाव देखने पर यह पता चलता है कि दोनों विद्यालयों के

शिक्षकों के मानसिक दबाव में सार्थक अन्तर है। सारणी के आधार पर हम कह सकते हैं कि निजी विद्यालयों के शिक्षकों पर अधिक मानसिक दबाव बना हुआ है।

सारणी संख्या-4

‘सतत् और व्यापक मूल्यांकन आधारित केन्द्रीय विद्यालयों तथा निजी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के मानसिक दबाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।’

न्यादर्श (20)	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान अन्तर	‘टी’ मान	सार्थक/असार्थक अन्तर
केन्द्रीय विद्यालयों के शिक्षक (20)	124.90	11.84	13.55	2.93	सार्थक अन्तर (.01)
CBSE आधारित निजी विद्यालयों के शिक्षक(20)	138.45	16.93			

df = 38 (40)

.05 सार्थकता स्तर पर 2.02

.01 सार्थकता स्तर पर 2.70

उपर्युक्त सारणी संख्या-4 से स्पष्ट है कि समग्र रूप से मानसिक दबाव के सन्दर्भ में सतत् और व्यापक मूल्यांकन आधारित केन्द्रीय विद्यालयों तथा CBSE आधारित निजी विद्यालयों के शिक्षकों के मध्यमान क्रमशः 124.90 एवं 138.45 तथा मानक विचलन क्रमशः 11.84 एवं 16.93 प्राप्त हुए। इन आँकड़ों के मध्य संगणित टी-मान 2.93 प्राप्त हुआ, जो .01 सार्थकता स्तर पर निर्धारित सारणी मान 2.70 से अधिक है, जो यह दर्शाता है कि समग्र रूप में सतत् और व्यापक मूल्यांकन आधारित केन्द्रीय विद्यालयों तथा CBSE आधारित निजी विद्यालयों के शिक्षकों के मानसिक दबाव में सार्थक अन्तर है। निष्कर्षतः 99 प्रतिशत विश्वास के साथ यह कहा जा सकता है कि समग्र रूप में CBSE आधारित निजी विद्यालयों के शिक्षकों पर अधिक मानसिक दबाव है।

निष्कर्ष व शैक्षिक निहितार्थ

शोध से यह निष्कर्ष प्राप्त हुए कि जिस उद्देश्य से सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन प्रणाली को लागू किया गया है वह उद्देश्य पूर्ण रूप से प्राप्त नहीं हो पाया है। शिक्षकों में अभी भी सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन को लेकर अस्पष्टता बनी हुई है तथा शिक्षक पूर्ण रूप से उसको नहीं समझ पा रहे हैं। वह मूल्यांकन की इस प्रक्रिया को एक बोझ के रूप में लेते हैं, क्योंकि उनका मानना है कि विद्यालयी कार्यों की अधिकता बार-बार लिए जाने वाले टेस्ट व टॉस्क व लिखित कार्यों ने कार्य की अधिकता को इतना बढ़ा दिया है कि वह समय को कमी महसूस करते हैं। उनका मानना है कि कक्षा में विद्यार्थियों की संख्या इतनी अधिक होती है कि प्रत्येक विद्यार्थी पर ध्यान दे पाना सम्भव नहीं हो पाता है और ना ही उनकी गतिविधियों का मूल्यांकन उचित प्रकार से हो पाता है। अतः मूल्यांकन प्रणाली में थोड़ा बदलाव लाकर हम इसे बेहतर बना सकते हैं। सर्वप्रथम शिक्षकों को इसे समझना होगा तभी वह आगे विद्यार्थियों व अभिभावकों तक सही मूल्यांकन की प्रक्रिया को पहुँचा सकते हैं। इसके लिए आवश्यक है कि हम निम्न चीजों को विद्यालयों में अपनायें :-

1. विद्यालयों में इंटरनेट की व्यवस्था की जाये जिससे विद्यार्थी विद्यालयों में ही प्रोजेक्ट कार्य को पूर्ण कर सकें।
2. प्रोजेक्ट विद्यार्थियों की रुचि के अनुरूप दिया जाये, जिसे विद्यार्थी स्वयं पूर्ण कर सकें।
3. कक्षा में समूह गतिविधियाँ अधिक से अधिक करवाई जाये जिससे विद्यार्थी उसमें खुलकर भाग ले सक।

4. रचनात्मक आंकलन तथा योगात्मक आंकलन के बीच अंतराल रखा जाये जिससे विद्यार्थी दोनों आंकलन की तैयारी उचित प्रकार से कर सकें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार विधेयक (2009), “नई दिल्ली – द गॅजेट ऑफ इण्डिया (2009)।
2. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF-2005), नई दिल्ली : राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् (NCERT), पृ. 81-87.
3. सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की रूपरेखा ;2011छद्म “उत्तरप्रदेश : SIERT.
4. SIERT (2012), “सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के संदर्भ में परिचर्चा”, SIERT, SSA व यूनिसेफ के संयुक्त तत्वावधान से (दिनांक 18.01.2012 से 19.01.2012)।
5. दीवान, हृदयकान्त “आंकलन का वर्तमान चक्रव्यूह”, जयपुर : शिक्षा विमर्श, वर्ष 14/अंक 3/मई-जून 2012/पेज नं. 16-22.
6. सिंह, गोविन्द, जितेन्द्र. (2012): सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की संकल्पना, नया शिक्षक, अक्टूबर-दिसम्बर 2012, पृष्ठ 17-25.
7. Shine, Kanchan. (2013): Article/Continuous and Comprehensive Evaluation, Evlition ten, teacher Edu. Network, August 21, 2013.
8. Mandal Ajit, Jayanta. (2013): Continuous and Comprehensive Evaluation - An Appraisal, Issues and Ideas in Education, Vol. 1, No. 2, September 2013, PP. 121-138.
9. गुप्ता, वेदप्रकाश. (2012): वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सीखना-सिखाना एवं मूल्यांकन, शिविरा पत्रिका, अक्टूबर 2012, पृ. सं. 20 व 21.
10. जोशी, भारती. (2010): देश के भावी कर्णधारों पर कहर ढहाती आज को परीक्षा प्रणाली. प्रौढ़ शिक्षा, अगस्त, पृ. 33-35.
11. बापना, उषा. (2013): व्यापक एवं सतत् मूल्यांकन कार्यक्रम के बढ़ते कदम, शिविरा पत्रिका, अक्टूबर, पृ. सं. 19-21.
12. जलालुद्दीन, ए.के. (2011) रटन्त से अर्थ निर्माण तक- पाठ्यचर्या, शिक्षणशास्त्र, और मूल्यांकन में फेरबदल”, शिक्षा विमर्श, वर्ष 13/अंक-2/मार्च-अप्रैल, पेज नं. 21-31.

13. डॉ. सिंह, गोविन्द एवं प्रियंका पारीक. (2012): गुरु शिष्य सम्बन्धों की पुनर्स्थापना में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन, शिविरा पत्रिका, पृ.सं. 18-19.
14. Chopra, Vanita; Bhatnagar, Arti; Dutta, indrajeet. (2013): Continuous and Comprehensive Evaluation: Empowerment of teachers for effective implementation, Teacher support NCTE, New Delhi, P. 1-10.
15. Best, J.W.; Kahn, J.V. (2006). Research in Education, New Delhi: Prentice Hall of India Private limited.
16. भटनागर, आर.पी.; भटनागर, मीनाक्षी. (2005): शिक्षा अनुसंधान. इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस, मेरठ।
17. दौढ़ियाल, एस.; फाटक, ए. (2003): शैक्षिक अनुसंधान विधिशास्त्र, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर
18. शर्मा, आर.ए. (2010): शैक्षिक एवं मानसिक मापन, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ, पृ.सं. 1-23.
19. सिंह, लाल. (2009): मापन मूल्यांकन एवं सांख्यिकी, साहित्य प्रकाशन, आगरा, पृ.सं. 37-44।
20. शर्मा, एन.के. (2009): शिक्षा में मापन मूल्यांकन एवं निर्देशन, के.एस.के. पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स, दरियागंज, नई दिल्ली, पृ.सं. 97।
21. रस्तोगी, गोपाल कृष्ण. (1995): शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़, पृ. सं. 97।
22. सिन्हा, जे.सी. (2005): शिक्षण अधिगम का मनोवैज्ञानिक आधार, अपोलो प्रकाशन, पिंग सिटी मार्केट, राजापार्क, जयपुर।
23. पाण्डेय, रामशक्ल. (2003): शिक्षा मनोविज्ञान, आर. लाल. बुक डिपो, मेरठ, पृ.सं. 210-221.
24. प्रो. गोपाल कृष्णन, एन. (1993): मानसिक स्वास्थ्य और आप, सुलभ प्रकाशन, लखनऊ, पृ.सं. 67-71.
25. भटनागर, सुरेश. (1985): शिक्षा मनोविज्ञान, लायल बुक डिपो, मेरठ, पृ.सं. 316-331.
26. Prof. Sharma, R.A. (2004): Fundamentals of Educational psychology, R.Lal Book depok, Meerut, (U.P.), P. 474-477.
27. Bhatnagar A.B., Bhatnagar, Meenakshi, Bhatnagar, Anurag (2003): Educational psychology, R.Lal Book depok, Meerut, (U.P.), P. 498-499.